Kitaab Rahe Ilm Se 72 Madani Phool (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 431
Weekly Booklet : 431

किताब राहे इ़ल्म से 72 मदनी फूल

(सफ़हात : 20)

अफ़ज़ल तरीन इ़ल्म 02
बदतरीन शख़्स 06
कामयाबी का त़रीक़ा 09
फ़िक्रों की कमी का नुस्ख़ा 19

पहले इसे पढ़ लीजिये !

ह़ज़रते इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तुर्किस्तान के मश्हूर शहर "ज़रनूज" में पैदा हुए इसी वज्ह से ज़रनूजी कहलाए। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ह़नफ़ी उ़लमाए किराम में अपनी मिसाल आप थे। आप ने साह़िबे हिदाया शैख़ुल इस्लाम बुरहानुद्दीन अबुल ह़सन अ़ली बिन अबू बक्र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से भी पढ़ा है। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल शरीफ़ तक़रीबन 610 हिजरी में हुवा। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मुख़्तसर और जामेअ़ अ़रबी किताब تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّمْ طَرِيْقَ التَّعَلُّم दावते इस्लामी की मजलिस अल मदीनुत इ़ल्मिय्या ने जिस का उर्दू तर्जमा बनाम "राहे इ़ल्म" किया है, येह किताब त़लबाए इ़ल्मे दीन, असातिज़ए किराम और वालिदैन के लिये बड़ी बेहतरीन है, इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी इस किताब में बहुत प्यारी रिवायात, वाक़िआ़त और नसीह़तों को जमा फ़रमाया है। मुकम्मल किताब का मुत़ालआ़ बहुत फ़ाइदेमन्द है, इस किताब से चन्द अहम मदनी फूलों को ले कर येह रिसाला तय्यार किया गया है। ह़ज़रते इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की किताब या इस रिसाले को त़लबाए किराम वक़्तन फ़ वक़्तन अपने मुत़ालए में रखें, क्यूंकि बार बार नसीह़तों का पढ़ना "अ़मल का तक़ाज़ा" करता है और वलियुल्लाह के क़लम से लिखी हुई येह सुन्हरी बातें दिल में तासीर पैदा करेंगी, **अल्लाह** पाक ने चाहा तो अ़मल करने का ज़ेहन बनेगा اِنْ شَآءَاللہ। **अल्लाह** पाक हमें इस से फ़ाइदा उठाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

والسّلام مع الاکرام

अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्तारी मदनी عُفِیَ عَنْہُ

(शोबा : हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब "राहे इ़ल्म" से 72 मदनी फूल

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला "किताब "राहे इ़ल्म" से 72 मदनी फूल" पढ़ या सुन ले उसे इ़ल्मे दीन सीखने का शौक़ अ़ता फ़रमा कर मां बाप और ख़ानदान समेत बे हिसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब क़ियामत का दिन होगा तो **अल्लाह** पाक की बारगाह में मुहद्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم हाज़िर होंगे और उन के साथ नूर की दवातें (Inkpots) होंगी फिर **अल्लाह** करीम इरशाद फ़रमाएगा : तुम मुहद्दिसीने किराम बड़े लम्बे अ़र्से मेरे नबी पर दुरूद पढ़ते रहे हो लिहाज़ा मेरी जन्नत और मेरी रह़मत की त़रफ़ जाओ। (اَدَبُ الْاِملاء وَالْاِستملاء، ص152)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾1﴿ अफ़ज़ल तरीन इ़ल्म

अफ़ज़ल तरीन इ़ल्म मौजूदा दरपेश उमूर से आगाही ह़ासिल करना है और अफ़ज़ल तरीन अ़मल अपने ह़ालात की ह़िफ़ाज़त करना है। (राहे इ़ल्म, स. 11)

﴾2﴿ दुआ़ की तौफ़ीक़ ही क़बूलिय्यत की अ़लामत है

مَنْ رُزِقَ الدُّعَاءَ لَمْ يُحْرَمِ الْاِجَابَةَ

तर्जमा : जिसे दुआ़ की तौफ़ीक़ दी गई वोह क़बूलिय्यत से हरगिज़ महरूम न किया जाएगा। (राहे इ़ल्म, स. 15)

﴾3﴿ इ़ल्म की तारीफ़

"اَمَّا تَفْسِيْرُ الْعِلْمِ: فَهُوَ صِفَةٌ يَتَجَلّٰى بِهَا لِمَنْ قَامَتْ هِيَ بِهِ الْمَذْكُوْرُ كَمَا هُوَ"

इ़ल्म एक ऐसी सिफ़त है कि जिस में येह सिफ़त पाई जाए उस पर हर वोह चीज़ जिसे येह सीखना और जानना चाहता है अपनी ह़क़ीक़त के मुताबिक़ ज़ाहिर हो जाती है। (राहे इ़ल्म, स. 16)

﴾4﴿ फ़िक़्ह की तारीफ़

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़िक़्ह की तारीफ़ इन अल्फ़ाज़ में करते हैं : "اَلْفِقْهُ مَعْرِفَةُ النَّفْسِ مَالَهَا وَمَا عَلَيْهَا" यानी नफ़्स का अपने नफ़ा व नुक़्सान को पहचान लेने का नाम फ़िक़्ह है। मज़ीद फ़रमाया : इ़ल्म ह़ासिल करने का मक़्सद इस पर अ़मल करना है और "अ़मल" दुनिया को आख़िरत के लिये छोड़ देने का नाम है। (राहे इ़ल्म, स. 16)

﴾5﴿ इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का मक़्सद

त़ालिबे इ़ल्मे दीन के लिये ज़रूरी है कि वोह इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने से रिज़ाए इलाही, आख़िरत की कामयाबी, अपने आप और तमाम न जानने वालों से जहल (यानी जहालत) को दूर करने, दीन को ज़िन्दा रखने और इस्लाम को बाक़ी रखने की निय्यत करे क्यूंकि इस्लाम की बक़ा सिर्फ़ इ़ल्म ही के साथ मुम्किन है और ज़ोहदो तक़्वा को भी जहालत की ह़ालत में इख़्तियार नहीं किया जा सकता।

(राहे इ़ल्म, स. 18)

﴾6﴿ इ़ल्मे दीन की लज़्ज़त

फ़िक़्हे ह़नफ़ी के बहुत बड़े इमाम, इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : "अगर दुनिया के सारे लोग मेरे ग़ुलाम हो जाएं तो मैं उन सब को आज़ाद कर दूं और उन की ज़िम्मेदारी से आज़ाद हो जाऊंगा।" उस की वज्ह येह है कि जिस

शख़्स को इ़ल्मो अ़मल की लज़्ज़त ह़ासिल हो जाए तो फिर वोह दुनिया की लज़्ज़तों और लोगों के एज़ाज़ो इकराम पर बिल्कुल नज़र नहीं रखता। (राहे इ़ल्म, स. 19)

﴾7﴿ लोगों से फ़ाइदा ह़ासिल करने के लिये इ़ल्म सीखना

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस ने आख़िरत के लिये इ़ल्म हासिल किया उस ने फ़ज़्ल (यानी हिदायत) को पा लिया लेकिन नुक़्सान तो उस त़ालिबे इ़ल्म के लिये है जो इ़ल्मे दीन को लोगों से फ़ाइदा ह़ासिल करने के लिये ह़ासिल करे। (राहे इ़ल्म, स. 19)

﴾8﴿ दुनिया का चाहने वाला

هِيَ الدُّنْيَا اَقَلُّ مِنَ الْقَلِيْلِ وَعَاشِقُهَا اَذَلُّ مِنَ الذَّلِيْلِ

तर्जमा : दुनिया आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी शै है और उस का चाहने वाला निहायत ही ज़लील है। (राहे इ़ल्म, स. 20)

﴾9﴿ येह किताब पढ़ लीजिये

त़ालिबे इ़ल्म के लिये मुनासिब है कि वोह इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की किताब "अल वसिय्यह" ग़ौर से पढ़े जो उन्हों ने यूनुस बिन ख़ालिद समती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के लिये उस वक़्त लिखी थी जब वोह घर वापस जा रहे थे।

(राहे इ़ल्म, स. 21)

﴾10﴿ इ़ल्म ह़ासिल करो

हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ قَبْلَ اَنْ يُّرْفَعَ، فَاِنَّ اَحَدَكُمْ لَا يَدْرِىْ مَتٰى يُفْتَقَرُ اِلٰى مَا عِنْدَهٗ وَعَلَيْكُمْ بِالْعِلْمِ" तर्जमा : इ़ल्म ह़ासिल करो क़ब्ल इस के कि वोह उठा लिया जाए क्यूंकि तुम में से कोई नहीं जानता कि उसे कब इस की ज़रूरत पड़े जो उस के पास है लिहाज़ा तुम पर इ़ल्म ह़ासिल करना लाज़िम है।

(हाशिया राहे इ़ल्म, स. 23) (کنز العمال، ج10، 5/72، حدیث:28861)

﴾11﴿ मशवरा करना सुन्नत है

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम कामों में ह़त्ताकि घरेलू ज़रूरिय्यात तक में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم से मशवरा किया करते थे। (राहे इ़ल्म, स. 24)

﴾12﴿ चाहते सब हैं कि हों औजे सुरय्या पे मुक़ीम

لِكُلٍّ اِلٰى شَاْوِ الْعُلَا حَرَكَاتُ وَلٰكِنْ عَزِيْزٌ فِى الرِّجَالِ ثَبَاتُ

तर्जमा : बुलन्दियों तक पहुंचने की ख़्वाहिश में तो हर इन्सान ह़रकत कर सकता है लेकिन लोगों के लिये साबित क़दमी (यानी इस्तिक़ामत) बहुत मुश्किल चीज़ है। (राहे इ़ल्म, स. 25)

﴾13﴿ 6 चीज़ें

जान लो ! तुम इ़ल्म ह़ासिल नहीं कर सकते मगर 6 चीज़ों के साथ, मैं तुम्हें उन तमाम के बारे में आगाह करता हूं। वोह 6 चीज़ें येह हैं : ﴾1﴿ ज़हानत ﴾2﴿ इ़ल्मे दीन का शौक़ ﴾3﴿ सब्र ﴾4﴿ बक़द्रे किफ़ायत माल ﴾5﴿ उस्ताज़ की रहनुमाई ﴾6﴿ एक त़वील ज़माना। (राहे इ़ल्म, स. 26)

﴾14﴿ क्लास में दोस्त कैसा होना चाहिये ?

त़ालिबे इ़ल्म को चाहिये कि वोह किसी ऐसे शख़्श को अपना रफ़ीक़ बनाए जो मेह़नती, परहेज़गार और मुस्तक़ीमुत्तबअ़ (यानी नेक फ़ित़रत वाला) हो, सुस्त, बेकार और ज़ियादा बोलने वाले, फ़सादी और फ़ितना परवर से दूर रहे। एक शाइ़र ने कहा है :

तर्जमा : कुन्द ज़ेहन की ग़लत़ आ़दतें एक ज़हीनो फ़त़ीन की ज़हानत पर बहुत जल्दी असर अन्दाज़ होती हैं। बिल्कुल ऐसे ही जैसे अगर अंगारे को राख में रख दिया जाए तो वोह ठन्डा हो जाता है। (राहे इ़ल्म, स. 27)

﴾15﴿ अदब की बरकत

"مَاوَصَلَ مَنْ وَصَلَ اِلَّا بِالْحُرْمَةِ وَمَا سَقَطَ مَنْ سَقَطَ اِلَّا بِتَرْكِ الْحُرْمَةِ"

तर्जमा : जिस ने जो कुछ पाया अदबो एहतिराम करने के सबब ही से पाया और जिस ने जो कुछ खोया वोह अदबो एहतिराम न करने के सबब ही खोया। कहा जाता है : "اَلْحُرْمَةُ خَيْرٌ مِّنَ الطَّاعَةِ" अदबो एहतिराम करना इ़ताअ़त करने से ज़ियादा बेहतर है इन्सान गुनाह करने की वज्ह से कभी काफ़िर नहीं होता बल्कि उसे हलका समझने की वज्ह से काफ़िर हो जाता है। (राहे इ़ल्म, स. 29)

﴾16﴿ बेटा या पोता ज़रूर आ़लिम बनेगा

शैख़ सदीदुद्दीन शीराज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने बुज़ुर्गों के ह़वाले से फ़रमाया करते थे : जो शख़्स येह चाहता है कि उस का बेटा "आ़लिम" बने उसे चाहिये कि तंगदस्त फ़ुक़हा (यानी माली त़ौर पर कमज़ोर उ़लमाए किराम) की देखभाल करे, उन की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम करे, उन की ज़रूरिय्यात पूरी करने के लिये कुछ न कुछ उ़न्हें देता रहे फिर भी अगर उस का बेटा आ़लिम न बना तो उस का पोता ज़रूर आ़लिम बनेगा। (राहे इ़ल्म, स. 30)

﴾17﴿ बदतरीन शख़्स

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोगों में से बदतरीन शख़्स वोह है जो किसी की दुनिया संवारते संवारते अपने दीन को बर्बाद कर डाले।

(ابن ماجہ، 4/339، حدیث:3966) (राहे इ़ल्म, स. 30)

﴾18﴿ इ़ल्म की बरकतों से मह़रूम शागिर्द

जो शख़्स अपने उस्ताज़ के लिये अज़िय्यत व तक्लीफ़ का बाइ़स बनता है, वोह इ़ल्म की बरकतों से मह़रूम हो जाता है और वोह शख़्स इ़ल्मे दीन से जैसा उस का ह़क़ है वैसा फ़ाइदा नहीं उठा सकता। (राहे इ़ल्म, स. 32)

﴾19﴿ एक रात में 17 बार वुज़ू किया (वाक़िआ)

बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ को वुज़ू से इस वज्ह से महब्बत थी कि "इ़ल्म नूर है" और "वुज़ू भी नूर है" तो वुज़ू करने से इ़ल्म की नूरानिय्यत मज़ीद बढ़ जाती है।

शैख़ शम्सुल अइम्मा इमाम सरख़्सी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का एक बार पेट ख़राब हो गया आप की आ़दत थी कि रात के वक़्त किताबों का मुतालआ़ फ़रमाया करते, पस उस रात पेट ख़राब होने की वज्ह से आप को सतरह (17) बार वुज़ू करना पड़ा क्यूंकि आप बग़ैर वुज़ू मुतालआ़ नहीं किया करते थे। (राहे इ़ल्म, स. 33)

﴾20﴿ छोटा लिखने की मुमानअ़त

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक शख़्स को देखा जो बहुत बारीक बारीक लिख रहा था, आप ने उस से फ़रमाया : अपने ख़त को इस क़द्र बे ढंगा बना कर क्यूं लिख रहे हो अगर तुम ज़िन्दा रहे तो इस लिखाई की वज्ह से शर्मिन्दगी उठाओगे और अगर फ़ौत हो गए तो तुम्हारे बाद तुम्हें बुरा भला कहा जाएगा और जब तुम बूढ़े हो जाओगे और तुम्हारी आंखें कमज़ोर हो जाएंगी तो तुम ख़ुद अपने इस काम पर शर्मिन्दा होगे। (राहे इ़ल्म, स. 34)

﴾21﴿ सुर्ख़ रंग से लिखना

त़ालिबे इ़ल्मे दीन को सुर्ख़ सियाही का इस्तिमाल नहीं करना चाहिये। सुर्ख़ सियाही इस्तिमाल करना बुज़ुर्गाने दीन का नहीं बल्कि फ़लासिफ़ा का त़रीक़ा है और बाज़ बुज़ुर्ग सुर्ख़ सियाही के इस्तिमाल को मकरूह (यानी नापसन्दीदा) जानते थे। (राहे इ़ल्म, स. 35)

﴾22﴿ उस्ताद का अदब

त़ालिबे इ़ल्मे दीन को चाहिये कि दौराने सबक़ बिला ज़रूरत उस्ताद के बिल्कुल क़रीब न बैठे बल्कि उस्ताद और त़ालिबे इ़ल्म के दरमियान कम अज़ कम

एक कमान का फ़ासिला होना चाहिये कि इस त़रह़ बैठने में अदब का पहलू ग़ालिब रहता है। (राहे इ़ल्म, स. 37)

﴾23﴿ तकब्बुर की नुहूसत

तकब्बुर के साथ इ़ल्म ह़ासिल नहीं हो सकता, जैसा कि एक शेर में है, जिस का तर्जमा येह है : इ़ल्म को तकब्बुर करने वाले नौजवान से इसी त़रह़ दुश्मनी है जिस त़रह़ सैलाब को बुलन्द मकान से दुश्मनी होती है। (राहे इ़ल्म, स. 37)

﴾24﴿ इस्तिक़ामत की बरकत

मश्हूर मक़ूला है : "مَنْ طَلَبَ شَيْئًا وَجَدَّ وَجَدَ وَمَنْ قَرَعَ الْبَابَ وَلَجَّ وَلَجَ" तर्जमा : जो किसी चीज़ की त़लब में मेह़नत व कोशिश करता रहा वोह उसे एक दिन ज़रूर पालेगा और जो किसी दरवाज़े को खटखटाए और मुसल्सल खटखटाता ही चला जाए तो एक दिन वोह उस के अन्दर ज़रूर दाख़िल हो जाएगा। (राहे इ़ल्म, स. 38)

﴾25﴿ तीन लोग

कुछ सीखने और समझने के लिये तीन अफ़राद की कोशिश व मेह़नत का होना ज़रूरी है। वोह तीन अफ़राद येह हैं। ﴾1﴿ त़ालिबे इ़ल्म ﴾2﴿ उस्ताज़ ﴾3﴿ बाप (अगर ज़िन्दा हो तो) (राहे इ़ल्म, स. 39)

﴾26﴿ मेह़नत ज़ाएअ़ नहीं होती

करोड़ों शाफ़ेइ़यों के इमाम, इमाम शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेह़नत और कोशिश हर दूर चीज़ को क़रीब कर देती है, मेह़नत और कोशिश हर बन्द दरवाज़े को खोल देती है। (राहे इ़ल्म, स. 39)

﴾27﴿ मेह़नत कीजिये

एक अ़रबी शाइ़र कहता है, तर्जमा अगर तू बग़ैर मेह़नत व मशक़्क़त के बहुत बड़ा आ़लिम बनना चाहता है तो फिर येह तेरा जुनून (यानी पागल पन) है।

जब माल मशक़्क़त के बग़ैर ह़ासिल नहीं किया जा सकता कि उस के कमाने के लिये मशक़्क़त उठाता है तो फिर इ़ल्म जो कि आज़मुल उमूर (यानी बहुत बड़ा अ़ज़मत वाला काम) है उसे बग़ैर मेह़नत व मशक़्क़त के कैसे ह़ासिल कर सकता है ! (राहे इ़ल्म, स. 40)

﴾28﴿ काम की बात

एक अ़क़्लमन्द का क़ौल है : सारी सारी रात काम में मसरूफ़ रहा करो अपने मक़्सद को जल्दी ह़ासिल कर लोगे। (राहे इ़ल्म, स. 41)

﴾29﴿ कामयाबी पाने का त़रीक़ा

ह़ज़रते अ़ल्लामा बुरहानुद्दीन ज़रनूजी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो येह चाहता है कि उस की तमाम ख़्वाहिशें पूरी हो जाएं उसे चाहिये कि इन ख़्वाहिशात की तह़सील के लिये रात भर अपने काम में मसरूफ़ रहे। ऐ मेरे दोस्त ! अगर तू फ़ज़्लो कमाल की मन्ज़िल तक पहुंचना चाहता है तो अपने खाने को कम कर, ताकि तू फ़वाइदो समरात में ह़िस्सा पा सके। (राहे इ़ल्म, स. 41)

﴾30﴿ जितनी मेह़नत उतना बदला

अ़रबी शेर का तर्जमा है : तू अपनी तमन्नाओं को ब क़द्रे मेह़नत ही ह़ासिल कर सकता है, जो ढेरों मक़ासिद ह़ासिल करना चाहता हो तो उसे चाहिये कि रातों को क़ियाम करे। (राहे इ़ल्म, स. 42)

﴾31﴿ इरादे जिन के पुख़्ता हों, नज़र जिन की ख़ुदा पर हो

हर बन्दा अपने इरादे के मुत़ाबिक़ ही बड़े बड़े उमूर तक पहुंचता है जिस में जितनी बुज़ुर्गी होगी वोह उसी क़द्र बुलन्द मर्तबे को पहुंचेगा। छोटे छोटे कम हिम्मत अफ़राद को छोटे छोटे काम भी बहुत बड़े मालूम होते हैं और बा हिम्मत अफ़राद की नज़र में बड़े से बड़ा काम कोई मुश्किल नहीं। (राहे इ़ल्म, स. 44)

﴾32﴿ बड़े काम पसन्दीदा हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ مَعَالِيَ الْاُمُوْرِ وَاَشْرَافَهَا وَيَكْرَهُ سَفْسَافَهَا" तर्जमा : **अल्लाह** पाक बुलन्द पाया और अच्छे कामों को पसन्द और हक़ीर व रद्दी कामों को नापसन्द फ़रमाता है। (معجم کبیر، 3/131، حدیث:2894) (राहे इ़ल्म, स. 45)

शर्हे हदीस : **अल्लाह** पाक अच्छे अख़्लाक़ और अच्छी आ़दात वाले को पसन्द फ़रमाता है जब कि हक़ीर और घटिया आ़दात वाले को नापसन्द फ़रमाता है, इन्सान अच्छी सोच व फ़िक्र और इम्तियाज़ की वज्ह से फ़रिश्ता सिफ़त बन जाता है जब कि शहवत और नापसन्दीदा सिफ़ात की वज्ह से जानवरों की सिफ़ात इख़्तियार कर लेता है, जो अच्छे अख़्लाक़ का मालिक होता है तो **अल्लाह** पाक उस के अख़्लाक़ की पाकीज़गी की वज्ह से उसे फ़रिश्तों की सफ़ में शामिल फ़रमा लेता है और जो शख़्स बुरे और घटिया अख़्लाक़ का मालिक होता है तो वोह जानवरों की सिफ़ात इख़्तियार कर लेता है जैसा कि कुत्ते की तरह लड़ाई झगड़ा, ऊंट की तरह कीना परवर, चीते की तरह मुतकब्बिर, लोमड़ी की तरह धोकेबाज़ और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की शैतानी सिफ़ात पैदा हो जाती हैं।

(التیسیر بشرح جامع الصغیر، 1/271 ملخصاً)

﴾33﴿ कामिल उस्ताज़ की अपने क़ाबिल तरीन शागिर्द को नसीहत

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से फ़रमाया : तुम तो बहुत कुन्द ज़ेहन थे मगर तुम्हारी लगातार कोशिश ने तुम्हें आगे बढ़ाया लिहाज़ा हमेशा सुस्ती से बचते रहना कि सुस्ती एक बहुत बड़ी आफ़त और मन्हूस चीज़ है। (राहे इ़ल्म, स. 45)

﴾34﴿ सुस्ती की नुहूसत

ऐ मेरे नफ़्स ! सुस्ती और काहिली छोड़ दे, वरना रुस्वाई ही तेरा मुक़द्दर होगी। मैं ने आज तक नहीं देखा कि काहिलों को ज़िल्लतो रुस्वाई और अपनी ख़्वाहिश पूरी न होने के सिवा कुछ मिला हो। (राहे इ़ल्म, स. 46)

﴾35﴿ इ़ल्म की बक़ा

मालूमात का बाक़ी रहना ही इ़ल्म की बक़ा है। (राहे इ़ल्म, स. 47)

﴾36﴿ इ़ल्मे दीन के सबब मग़्फ़िरत की उम्मीद

जब लोग ग़फ़्लत में पड़े होते हैं तो बन्दा इ़ल्मे दीन के ज़रीए ही नजात त़लब करता है। मौत के वक़्त जब रूह़ सीने की हड्डियों तक आ पहुंचती है बन्दा इ़ल्मे दीन की बदौलत मग़्फ़िरत की उम्मीद रखता है। (राहे इ़ल्म, स. 50)

﴾37﴿ भूलने के मरज़ के अस्बाब

फ़ाज़िल रत़ूबतें और बलग़ाम इन्सान के अन्दर सुस्ती पैदा करती हैं और कम खाना बलग़ाम को कम करने का आज़माया हुवा नुस्ख़ा है। एक क़ौल के मुत़ाबिक़ 70 अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि ज़ियादा भूलना, ज़ियादा बलग़ाम से पैदा होता है जब कि बलग़ाम का ज़ियादा होना ज़ियादा पानी पीने की वज्ह से होता है और पानी के ज़ियादा पीने की वज्ह ज़ियादा खाना है। (बलग़ाम कम करने के त़रीक़े येह हैं :) नहार मुंह किश्मिश खाना भी बलग़ाम को कम करने के लिये मुफ़ीद है, क़ै भी फ़ाज़िल रत़ूबात और बलग़ाम में कमी का बाइ़स बनती है। ज़ियादा खाने के नुक़्सानात में से एक बड़ी ख़राबी इतलाफ़े माल (यानी माल ज़ाएअ़ करना) है। (राहे इ़ल्म, स. 51 ता 53)

﴾38﴿ बुध का बा बरकत दिन

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कोई ऐसा अ़मल नहीं जिस की शुरूआ़त बुध से हुई हो और वोह मुकम्मल न हो। (کشف الخفاء، 2/163، حدیث:2189) बुध का दिन मोमिनीन के ह़क़ में मुबारक साबित होता है। (राहे इ़ल्म, स. 54)

﴾39﴿ उस्ताद साह़िब कितना सबक़ दें

इमामे आ़ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه शैख़ क़ाज़ी उ़मर बिन अबू बक्र ज़रन्जी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से बयान करते हैं : इब्तिदाई त़लबाए किराम के लिये सबक़ की मिक़्दार इतनी हो कि जिस को ब आसानी दो मरतबा दोहराने से याद कर सकें।

(राहे इ़ल्म, स. 54)

﴾40﴿ इ़ल्म को लिख कर महफ़ूज़ कर लो

त़ालिबे इ़ल्मे दीन के लिये ज़रूरी है कि उस्ताद से सबक़ ह़ासिल करे और बार बार दोहराने के बाद उस को लिख कर क़ैद करे कि इस त़रह़ करना बहुत ज़ियादा फ़ाइदेमन्द है। त़ालिबे इ़ल्म को कोई भी ऐसी चीज़ नहीं लिखनी चाहिये जो उस ने समझी न हो क्यूंकि इस त़रह़ लिख लेना त़बीअ़त की परेशानी और ज़हानत को खो देने और वक़्त ज़ाएअ़ करने का सबब होगा। (राहे इ़ल्म, स.55)

﴾41﴿ इ़ल्म की ख़िदमत की बरकत

इ़ल्म की शराइ़त में येह बात शामिल है कि जो इ़ल्म की ख़िदमत करेगा तो एक दिन तमाम लोग भी उस के ख़ादिम होंगे। (राहे इ़ल्म, स. 59)

﴾42﴿ पहले तोलो बाद में बोलो

किसी ने कहा : सोचो बिचार किया करो ख़ुद ही समझ जाओगे। गुफ़्तगू की मिसाल "तीर" की त़रह़ है इस लिये चाहिये कि मुंह से अल्फ़ाज़ निकालने से

पहले सोच व बिचार कर लिया जाए ताकि बोले गए अल्फ़ाज़ बा मक़्सद साबित हों। (राहे इ़ल्म, स. 59)

﴾43﴿ गुफ़्तगू करने वाले के लिये 5 वसिय्यतें

अगर तू शफ़ीक़ नसीह़त करने वाले की बात माने तो मैं तुझे त़र्ज़े गुफ़्तगू से मुतअ़ल्लिक़ 5 चीज़ों की वसिय्यत करता हूं, कभी भी उन से ग़फ़लत न करना वोह येह कि (1) बात करने से पहले ज़रूरत का लिह़ाज़, (2) गुफ़्तगू के वक़्त का ख़याल, (3) गुफ़्तगू के अन्दाज़, (4) गुफ़्तगू की मिक़्दार और (5) मकान यानी मुतक़ज़ाए ह़ाल को पेशे नज़र रखना। (राहे इ़ल्म, स. 60)

﴾44﴿ कसीर इ़ल्म ह़ासिल करने का सबब

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से पूछा गया कि आप ने इतना इ़ल्म कैसे ह़ासिल किया ? तो आप ने फ़रमाया: "بِلِسَانٍ سَئُوۡلٍ وَقَلۡبٍ عُقُوۡلٍ" यानी बहुत ज़ियादा सुवाल करने वाली ज़बान और बेदार दिल के ज़रीए। (राहे इ़ल्म, स. 61)

﴾45﴿ आप इस मस्अले में क्या फ़रमाते हैं ?

पहले ज़माने में त़ालिबे इ़ल्मे दीन को कसरते सुवाल की वज्ह से "مَاتَقُوۡلُ" के नाम से पुकारा जाता था क्यूंकि त़ालिब इ़ल्मों की आ़दत थी कि वोह कसरत से "مَا تَقُوۡلُ فِیۡ هٰذِهِ الۡمَسۡئَلَةِ" यानी आप इस मस्अले में क्या फ़रमाते हैं, कहा करते थे। (राहे इ़ल्म, स. 61)

﴾46﴿ इ़ल्म के साथ कारोबार मुम्किन है

ख़ुद इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस वज्ह से बहुत बड़े फ़क़ीह बने कि जब वोह कपड़े बेचा करते थे तो उस वक़्त भी अपनी दुकान में ब कसरत

इ़ल्मी गुफ़्तगू फ़रमाया करते थे। इस बात से मालूम हुवा कि इ़ल्मे दीन और शरई़ मसाइल कारोबार के साथ सीखे जा सकते हैं। (राहे इ़ल्म, स. 61)

﴾47﴿ इमामे आज़म की इ़ल्मिय्यत का सबब

इमामे आज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का फ़रमान है : बेशक मैं ने इ़ल्म को ह़म्दो शुक्र के सबब ही ह़ासिल किया है वोह इस त़रह़ कि जब भी मैं कोई इ़ल्मी बात समझ लेता हूं और उस की तह तक पहुंच जाता हूं तो उस के बाद اَلْحَمْدُ لِلّٰه ज़रूर कहता हूं।

(राहे इ़ल्म, स. 62)

﴾48﴿ इ़ल्मे फ़िक़्ह के बहुत बड़े आ़लिम कैसे बने ?

इमाम शम्सुल अइम्मा ह़लवानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के वालिद बहुत ग़रीब थे, मिठाई बना कर बेचा करते थे उन की आ़दत थी कि अक्सर उ़लमाए किराम को मिठाइयां वग़ैरा भेजते रहते थे और उन से अ़र्ज़ करते कि बस मेरे बेटे के लिये दुआ़ फ़रमाया करें। उन की सख़ावत, हुस्ने अ़क़ीदत और गिर्या व ज़ारी का नतीजा येह निकला कि उन के बेटे यानी शम्सुल अइम्मा ह़लवानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इ़ल्म की आला मन्ज़िलों को त़ै किया और वोह अपने वक़्त के बहुत बड़े आ़लिम हुए। मालदारों को चाहिये कि उ़लमाए किराम (كَثَّرَهُمُ اللهُ यानी **अल्लाह** पाक उन की तादाद बढ़ाए) को किताबें ख़रीद कर दें, नई किताबें छपवाएं कि येह सब कुछ इ़ल्मो फ़िक़्ह की इशाअ़त के लिये निहायत मददगार साबित होगा। (राहे इ़ल्म, स. 64)

﴾49﴿ त़ालिबे इ़ल्मे दीन ख़ुद्दार हो

त़ालिबे इ़ल्मे दीन को ग़ैरतमन्द और अपनी इ़ज़्ज़ते नफ़्स की ह़िफ़ाज़त करने वाला होना चाहिये और उसे लोगों के माल की लालच नहीं रखनी चाहिये।

(राहे इ़ल्म, स. 65)

पहले ज़माने में त़लबा का येह त़रीक़ए कार था कि पहले कोई काम सीखते फिर उस के बाद इ़ल्म ह़ासिल करते ताकि लोगों के माल की त़रफ़ ह़िर्स पैदा

न हो और जो दूसरों के माल से अमीर बनना चाहता है वोह अमीर बनने के बजाए फ़क़ीर हो जाता है। (राहे इ़ल्म, स. 66)

﴾50﴿ सबक़ की दोहराई की अहमिय्यत

दिलों में उ़लूम उस वक़्त तक पक्के नहीं हो सकते जब तक अस्बाक़ की अच्छी त़रह़ दोहराई न की जाए। त़ालिबे इ़ल्म को चाहिये कि वोह पिछले सबक़ की दिन में पांच बार दोहराई करे जब कि पर्सों का सबक़ चार बार और तर्सों का सबक़ तीन बार और उस से पहले का सबक़ दो बार और छटे रोज़ का सबक़ एक बार रोज़ाना ज़रूर दोहराए। येह त़रीक़ा इ़ल्म को मह़फ़ूज़ रखने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। (राहे इ़ल्म, स. 67)

﴾51﴿ छुट्टी न करें

शैख़ुल इस्लाम इमाम बुरहानुद्दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि मैं अपने तमाम दोस्तों से सिर्फ़ इस लिये आगे बढ़ गया कि मैं ने इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के दौरान कभी क्लास की छुट्टी नहीं की। (राहे इ़ल्म, स. 68)

﴾52﴿ एक किताब ज़बानी याद

ह़ज़रते फ़ख़्रुल इस्लाम क़ाज़ी ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का फ़रमान है कि फ़िक़्ह सीखने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह फ़िक़्ह की एक किताब हमेशा के लिये ह़िफ़्ज़ कर ले ताकि फ़िक़्ह के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मालूमात का ह़ासिल करना इस के लिये आसान हो जाए। (राहे इ़ल्म, स. 61)

﴾53﴿ बाज़ गुनाहों की सज़ा

ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "اِنَّ مِنَ الذُّنُوْبِ ذُنُوْبًا لَا يُكَفِّرُهَا اِلَّا هَمُّ الْمَعِيْشَةِ" यानी बेशक कुछ गुनाह ऐसे होते हैं कि जिन का कफ़्फ़ारा सिर्फ़ फ़िक्रे मआ़श ही है। (معجم اوسط، 1/42، حدیث:102) (राहे इ़ल्म, स. 70)

शर्हे ह़दीस : इस ह़दीस में वोह फ़िक्रे मआ़श मुराद है जो कि आमाले ख़ैर में मुख़िल न हो और न ही ऐसी फ़िक्र हो जो दिल को इतना मश्ग़ूल कर दे कि नमाज़ में हुज़ूरे क़ल्ब न हो सके। लिहाज़ा ऐसी फ़िक्रे मआ़श यक़ीनन फ़िक्रे आख़िरत है। नीज़ एक त़ालिबे इ़ल्म के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह जितना मुम्किन हो दुन्यावी मुआ़मलात से दूर रहे कि इसी वज्ह से पहले के उ़लमा तह़सीले इ़ल्म के लिये सफ़र इख़्तियार किया करते थे। (राहे इ़ल्म, स. 70)

﴾54﴿ इ़ल्मे दीन की लज़्ज़त

जो शख़्स राहे इ़ल्मे दीन में पहुंचने वाली तकालीफ़ को ख़ुश दिली से बरदाश्त करता है तो फिर वोह एक ऐसी लज़्ज़त पा लेता है जो दुनिया भर की लज़्ज़तों से ज़ियादा लज़ीज़ होती है इमाम मुहम्मद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जब सारी रात जागते और किसी मुश्किल मस्अले को ह़ल करने में कामयाब हो जाते तो फ़रमाते : "शहज़ादों को भला येह लज़्ज़त कहां महसूस हो सकती है।" (राहे इ़ल्म, स. 71)

﴾55﴿ इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने का बेहतरीन वक़्त

इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये बेहतरीन वक़्त इब्तिदाई जवानी, वक़्ते सह़र और मग़रिब व इ़शा के दरमियान का वक़्त है। (राहे इ़ल्म, स. 73)

﴾56﴿ सब से कड़वी चीज़

एक शाइ़र के अ़रबी शेर का तर्जमा है : मैं ने बहुत सी कड़वी चीज़ों को चखा और इस नतीजे पर पहुंचा कि किसी के आगे सुवाल करने से ज़ियादा कोई और चीज़ कड़वी नहीं। (राहे इ़ल्म, स. 76)

﴾57﴿ लिखने की बरकत

कहा जाता है कि "مَنْ حَفِظَ قَرَّ وَمَنْ كَتَبَ شَيْئًا قَرَّ" यानी जिस ने सिर्फ़ ज़बानी

याद करने पर भरोसा किया तो अ़न्क़रीब वोह शै ज़ेहन से निकल जाएगी और जो शख़्स लिख लेता है तो अब वोह चीज़ क़रार पकड़ लेती है। (राहे इ़ल्म, स. 78)

﴾58﴿ क़ियामत तक ख़ैर ही ख़ैर

प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ हिलाल बिन यसार ! क़लमदान को अपने से जुदा मत करो क्यूंकि क़लमदान और उसे रखने वाला दोनों के लिये क़ियामत तक ख़ैर ही ख़ैर है। (مفتاح السعادۃ، 1/968) (राहे इ़ल्म, स. 71)

﴾59﴿ दिलो जान से काम में लग जाओ

मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : जब किसी काम में लग जाओ तो फिर उस में ऐसे मगन हो जाओ कि बस हर वक़्त उसी के हुसूल में कोशां रहो। (राहे इ़ल्म, स. 80)

﴾60﴿ बे अ़मल त़ालिबे इ़ल्म के लिये वईद

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि जो त़ालिबे इ़ल्मी के ज़माने में परहेज़गारी इख़्तियार नहीं करता **अल्लाह** पाक उसे तीन अश्या में से किसी एक में मुब्तला फ़रमा देता है या तो उसे जवानी में मौत देता है या फिर वोह बावुजूदे इ़ल्म होने के क़र्या ब क़र्या मारा मारा फिरता है या फिर वोह सारी उ़म्र हुक्मरानों की ग़ुलामी करता रहता है। (مفتاح السعادۃ، 1/50) (राहे इ़ल्म, स. 81)

﴾61﴿ त़ालिबे इ़ल्मे दीन के लिये अहम बात

एक त़ालिबे इ़ल्मे दीन के लिये सब से बड़ी परहेज़गारी की बात तो येह है कि उसे ज़ियादा खाने ज़ियादा सोने और ज़ियादा गुफ़्तगू करने से बचना चाहिये।

(राहे इ़ल्म, स. 81)

﴾62﴿ काग़ज़ क़लम हर वक़्त साथ

एक त़ालिबे इ़ल्म को चाहिये कि हर वक़्त किताबें अपने साथ रखे ताकि फ़ुर्सत के वक़्त उन का मुत़ालआ़ कर सके। किसी अ़क़्लमन्द का क़ौल है : जिस की बग़ल में हर वक़्त किताब न हो, उस के दिल में ह़िक्मत व दानाई पक्की नहीं हो सकती। मुनासिब येह है कि कॉपी भी पास रखे जो फ़ाइदे वाली बात सुने लिख ले और साथ में क़लमदान भी रखे ताकि सुनी हुई ख़ास बातें लिखने में मुश्किल न हो।

(राहे इ़ल्म, स. 85)

﴾63﴿ क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा को बढ़ाने वाली शै

क़ुरआने करीम को देख कर पढ़ने से ज़ियादा और कोई चीज़ क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा को तेज़ नहीं करती, वैसे भी क़ुरआने पाक को देख कर पढ़ना ही अफ़ज़ल है। (राहे इ़ल्म, स. 85)

﴾64﴿ इमाम शाफ़ेई़ का अपने उस्ताज़ साह़िब से ह़ाफ़िज़े का अ़र्ज़ करना

करोड़ों शाफ़ेइ़यों के इमाम, इमाम शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

شَكَوْتُ اِلٰى وَكِيْعٍ سُوْءَ حِفْظِى فَاَرْشَدَنِىْ اِلٰى تَرْكِ الْمَعَاصِى

فَاِنَّ الْحِفْظَ فَضْلٌ مِنْ اِلٰهِى وَفَضْلُ اللهِ لَا يُهْدٰى لِعَاصِى

तर्जमा : मैं ने अपने उस्ताज़ ह़ज़रते वकीअ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ह़ाफ़िज़े की कमज़ोरी की शिकायत की तो उन्हों ने मुझे गुनाहों से बचने की तरग़ीब दी और फ़रमाया : "क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा" **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से एक फ़ज़्ल है और अल्लाह पाक का येह फ़ज़्ल गुनाहों का आ़दी नहीं पा सकता। (राहे इ़ल्म, स. 86)

﴾65﴿ क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत करने वाली चीज़ें

शहद का इस्तिमाल रखना, गोंद मअ़ शकर इस्तिमाल करना, नहार मुंह 21 दाने किशमिश खाना भी ह़ाफ़िज़े को क़वी करता है और इन्सान को बहुत से अमराज़ से शिफ़ा देता है। (इन चीज़ों को इस्तिमाल करने से पहले अपने त़बीब से मशवरा कर लीजिये।) (राहे इ़ल्म, स. 87)

﴾66﴿ फ़िक्रों की कमी का नुस्ख़ा

नमाज़ को ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ (यानी **अल्लाह** पाक की अ़ज़मत पेशे नज़र हो, दुनिया से तवज्जोह हटी हुई हो और नमाज़ में दिल लगा हो और सुकून से खड़ा रहे, इधर उधर न देखे, अपने जिस्म और कपड़ों के साथ न खेले और कोई बेकार काम न करे) के साथ अदा करना और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने में लगे रहना फ़िक्र और ग़म को दूर कर देता है। (राहे इ़ल्म, स. 87)

﴾67﴿ किन चीज़ों से भूलने का मरज़ पैदा होता है ?

तर धनिया खाना, खट्टे सेब खाना, फांसी चढ़े शख़्स की त़रफ़ देखना, क़ब्र की तख़्तियां पढ़ना, ऊंटों की क़त़ार के दरमियान से गुज़रना, ज़िन्दा जूओं को यूंही ज़मीन पर छोड़ देना, गुद्दी पर पछने लगवाना, येह तमाम बातें निस्यान (यानी भूलने के मरज़) को पैदा करती हैं। (राहे इ़ल्म, स. 88)

﴾68﴿ रिज़्क़ की कमी का एक सबब

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुआ से तक़्दीर पलट जाती है और नेकियों से उ़म्र में इ़ज़ाफ़ा होता है और बेशक बन्दा गुनाह करने की वज्ह से रिज़्क़ से मह़रूम हो जाता है।

(مستدرک، 2/163، حدیث:1857) (राहे इ़ल्म, स. 81)

﴾69﴿ रिज़्क़ में इ़ज़ाफ़े के अस्बाब

सुब्ह जल्दी उठना नेमतों में इ़ज़ाफ़े का बाइ़स बनता है, ख़ुसूसन इस से रिज़्क़ में इ़ज़ाफ़ा होता है, इसी त़रह़ ख़ुशख़त़ी रिज़्क़ की चाबियों में से एक चाबी है और ख़न्दा पेशानी व ख़ुश कलामी भी रिज़्क़ को बढ़ाती है। ह़ज़रते ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : घर और बरतनों को साफ़ सुथरा रखना मालदारी का सबब है नीज़ रिज़्क़ की वुस्अ़त का मज़बूत तरीन ज़रीआ़ येह है कि इन्सान नमाज़ को ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़, तादीले अरकान का लिह़ाज़ करते हुए और तमाम वाजिबात और सुननो आदाब की पूरी त़रह़ रिआ़यत करते हुए अदा करे। (राहे इ़ल्म, स. 91)

﴾70﴿ ग़ैर ज़रूरी कामों का नतीजा

"مَنِ اشْتَغَلَ بِمَا لَا يَعْنِيْهِ يَفُوْتُهٗ مَا يَعْنِيْهِ" यानी जो ग़ैर ज़रूरी कामों में मश्ग़ूल हो जाए उस से ज़रूरी काम तक छूट जाते हैं। (राहे इ़ल्म, स. 92)

﴾71﴿ पागल शख़्स

जब तुम किसी शख़्स को बहुत ज़ियादा बोलते देखो तो फिर उस के पागल होने का भी यक़ीन कर लो। (राहे इ़ल्म, स. 92)

﴾72﴿ लम्बी उ़म्र पाने का नुस्ख़ा

बिला ज़रूरत हरे भरे दरख़्तों को काटने से बचना, वुज़ू को सुन्नतो आदाब का ख़याल रखते हुए करना, नमाज़ को ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से पढ़ना, एक ही एह़राम से ह़ज व उ़मरह अदा करना (यानी ह़ज्जे क़िरान करना) अपनी सेह़त का ख़याल रखना। येह तमाम बातें उ़म्र में ज़ियादती का सबब बनती हैं। (राहे इ़ल्म, स. 95)

अगले हफ़्ते का रिसाला

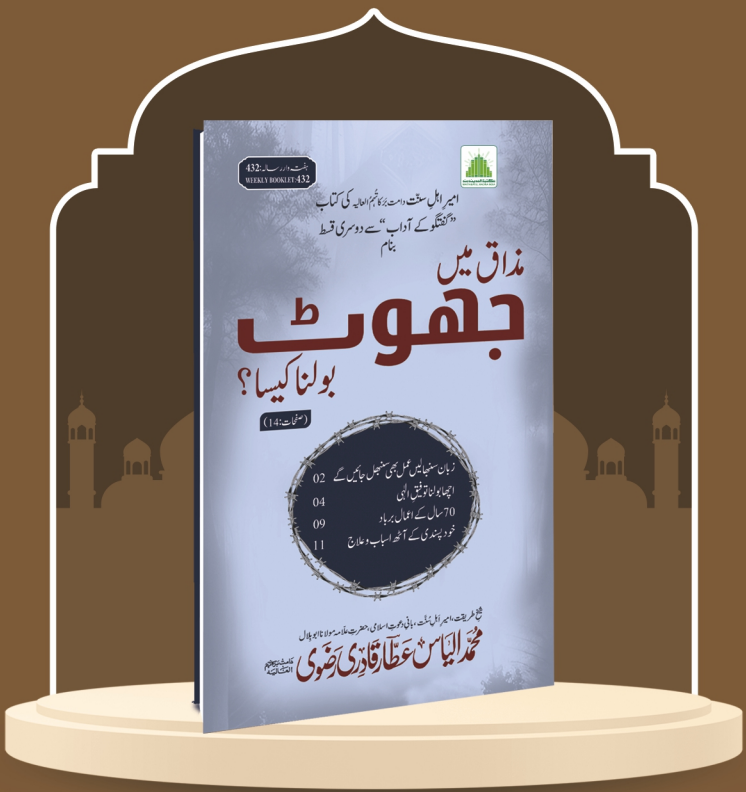

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025